6 से 8 वर्ष के बच्चों के लिए

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की स्थापना पुस्तकों के प्रोन्नयन और पठन अभिरुचि के विकास के उद्देश्य से सन् 1957 में भारत सरकार (उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा की गई थी। न्यास द्वारा हिंदी, अँग्रेजी सहित 30 से अधिक भाषाओं व बोलियों में पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। बच्चों की पुस्तकों का प्रकाशन सदैव से संस्था की प्राथमिकता रही है।



ISBN 978-81-237-7147-2

पहला संस्करण : 2014
तीसरी आवृत्ति : 2019 (*शक* 1940)

Fir Khil Gaye Phool *(Hindi Original)*

₹ 40.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज़-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in

नेहरू बाल पुस्तकालय

फिर खिल गये फूल

कुसुमलता सिंह
चित्रः पार्थ सेनगुप्ता



nbt.india
एकः सूते सकलम्
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

जंगल में फूल खिले थे। एक दिन वहाँ आ गया एक चोर। उसे फूलों के रंग, उनकी खुशबू अच्छी नहीं लगती थी। सबसे ज्यादा नफरत थी उसे पीले फूलों से।



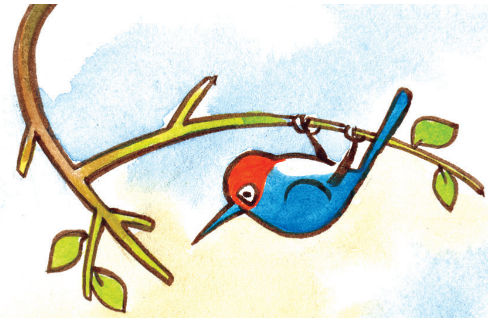


एक दिन उस चोर ने जंगल के सारे पीले फूल चुरा लिए।

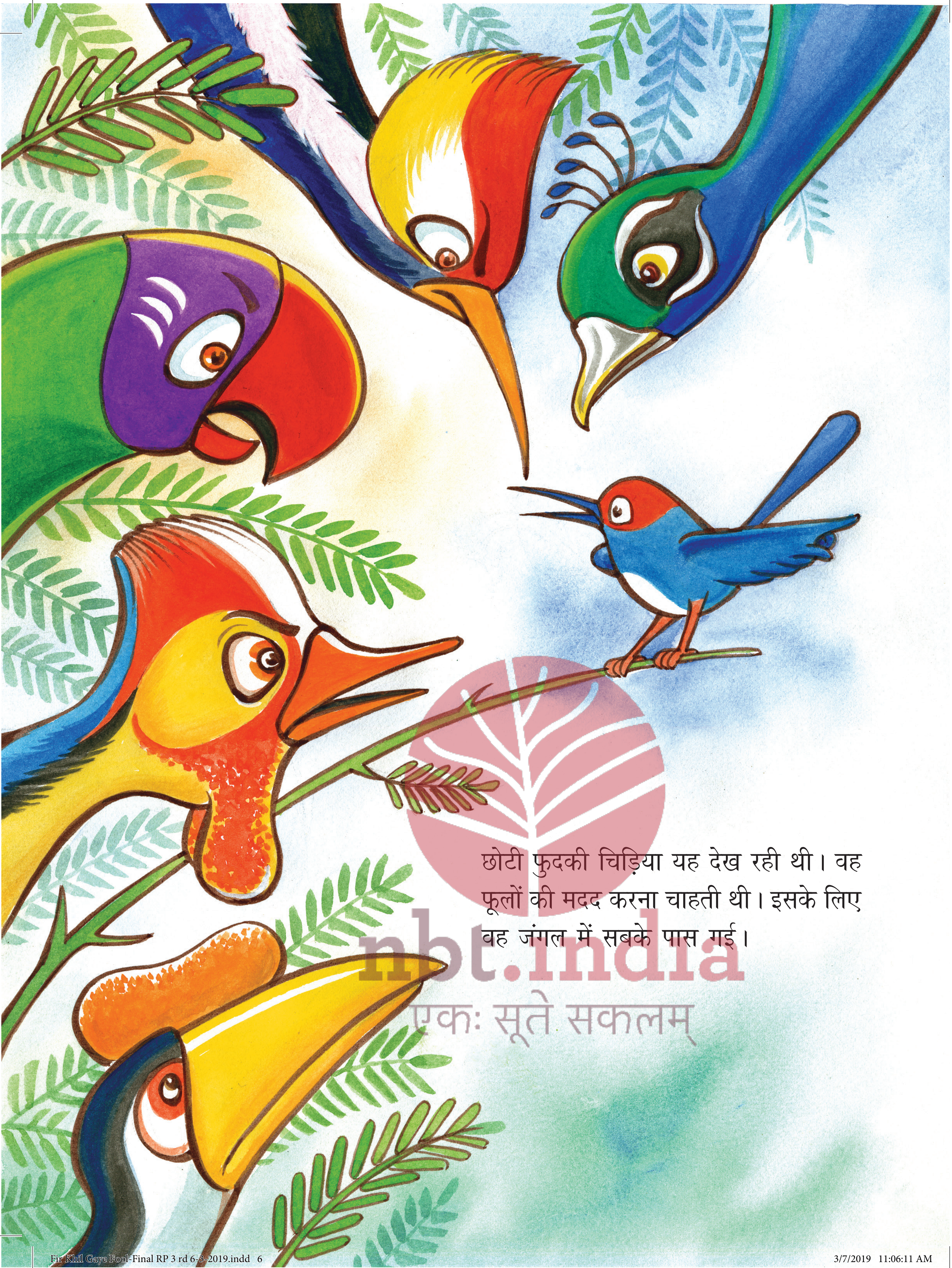
सूरजमुखी, गेंदा, चंपा, अमलतास, पीली कनेर, सरसों के फूल, तोरई के फूल और भी ढेर सारे।



उन फूलों को फूल चोर ने एक गठरी में बाँध लिया।

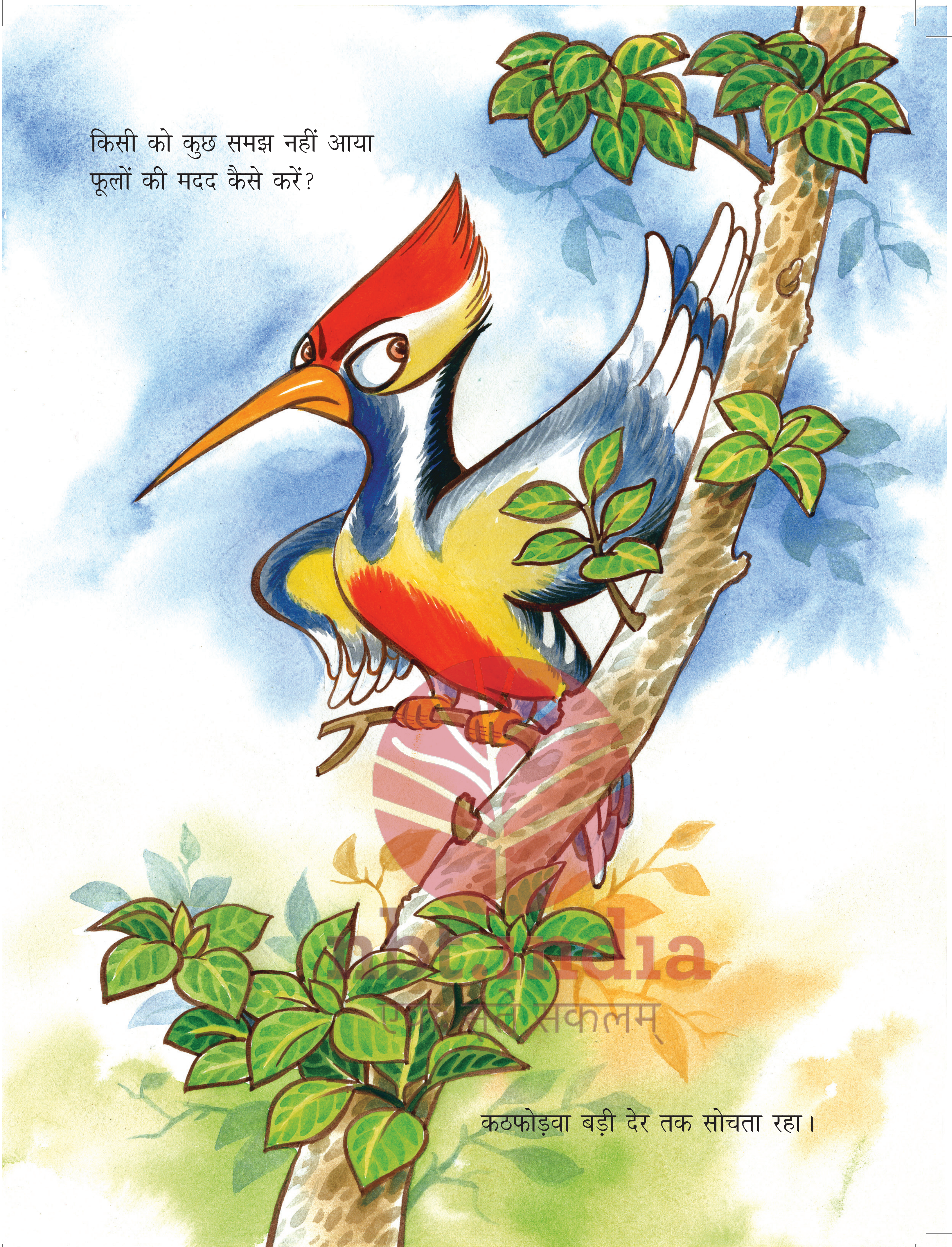






छोटी फुदकी चिड़िया यह देख रही थी। वह फूलों की मदद करना चाहती थी। इसके लिए वह जंगल में सबके पास गई।

किसी को कुछ समझ नहीं आया
फूलों की मदद कैसे करें?



कठफोड़वा बड़ी देर तक सोचता रहा।

गठरी में बंधे फूल मुरझा कर सूख रहे थे। यह देखकर फूल चोर बहुत खुश हुआ।

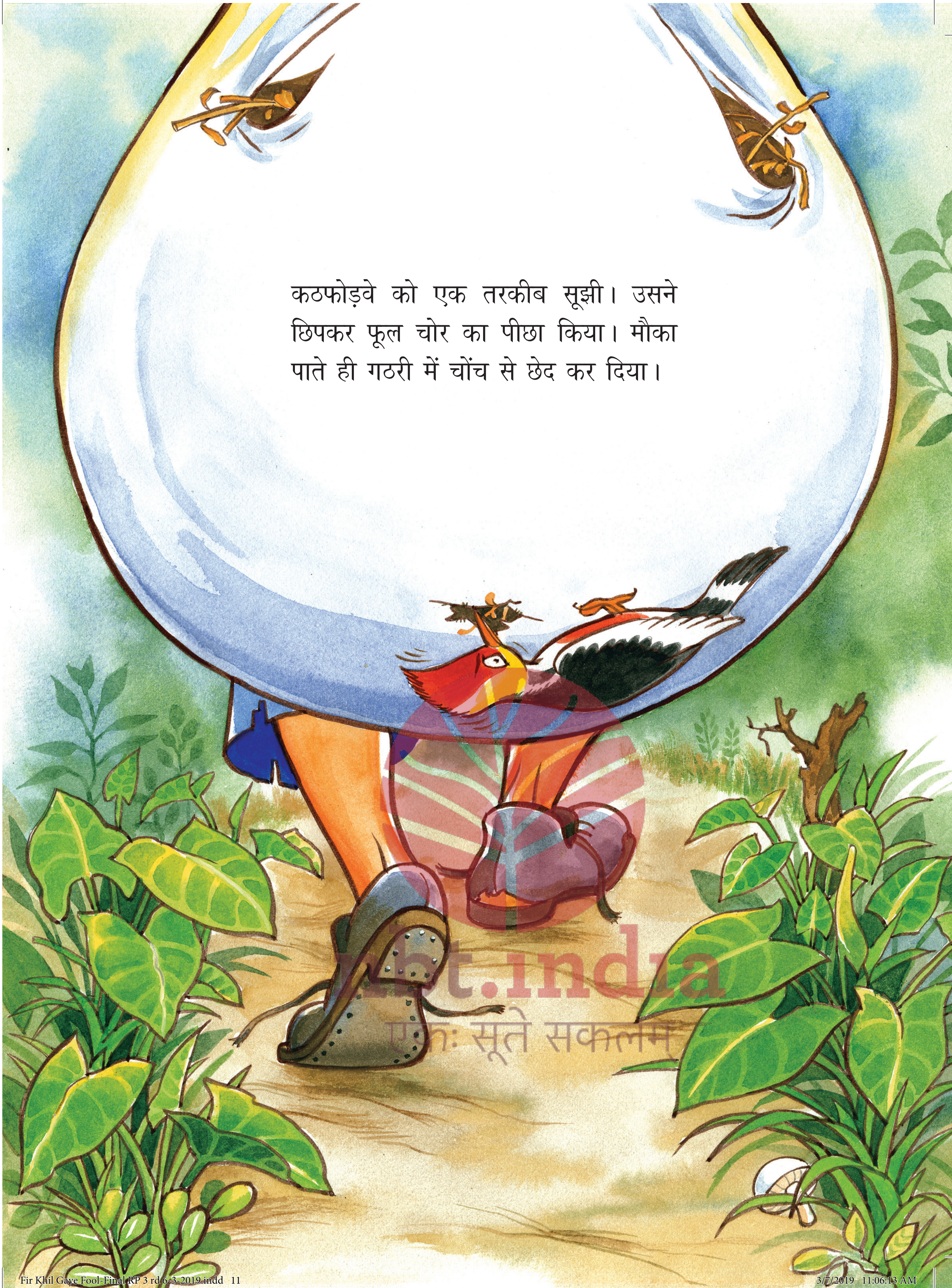


एक दिन उसने सूखे फूलों की गठरी पीठ पर
लादी और बाहर घूमने निकला।





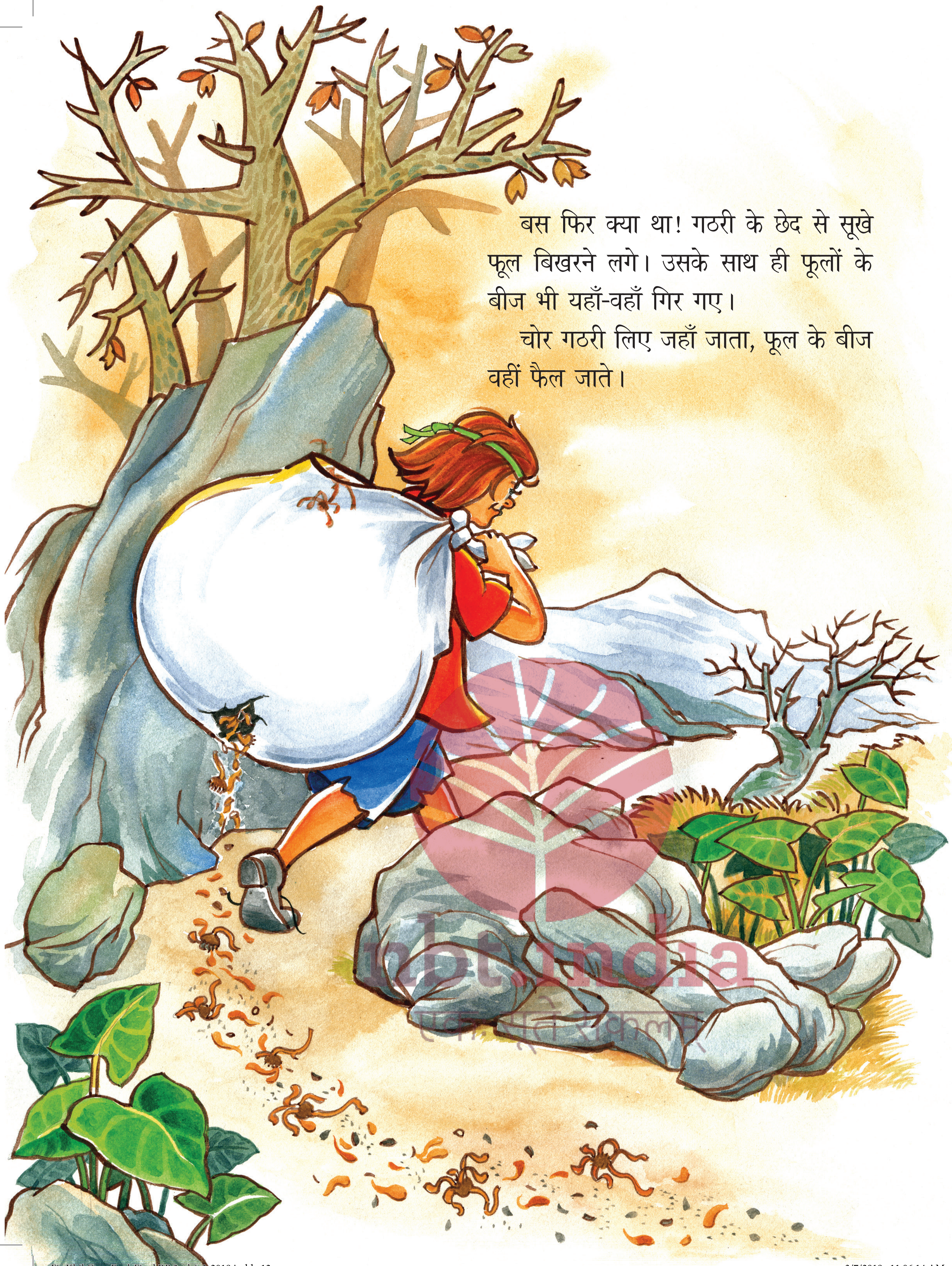
जब फुदकी ने यह देखा तो कठफोड़वे के पास गई। उसको यह बात बताई।



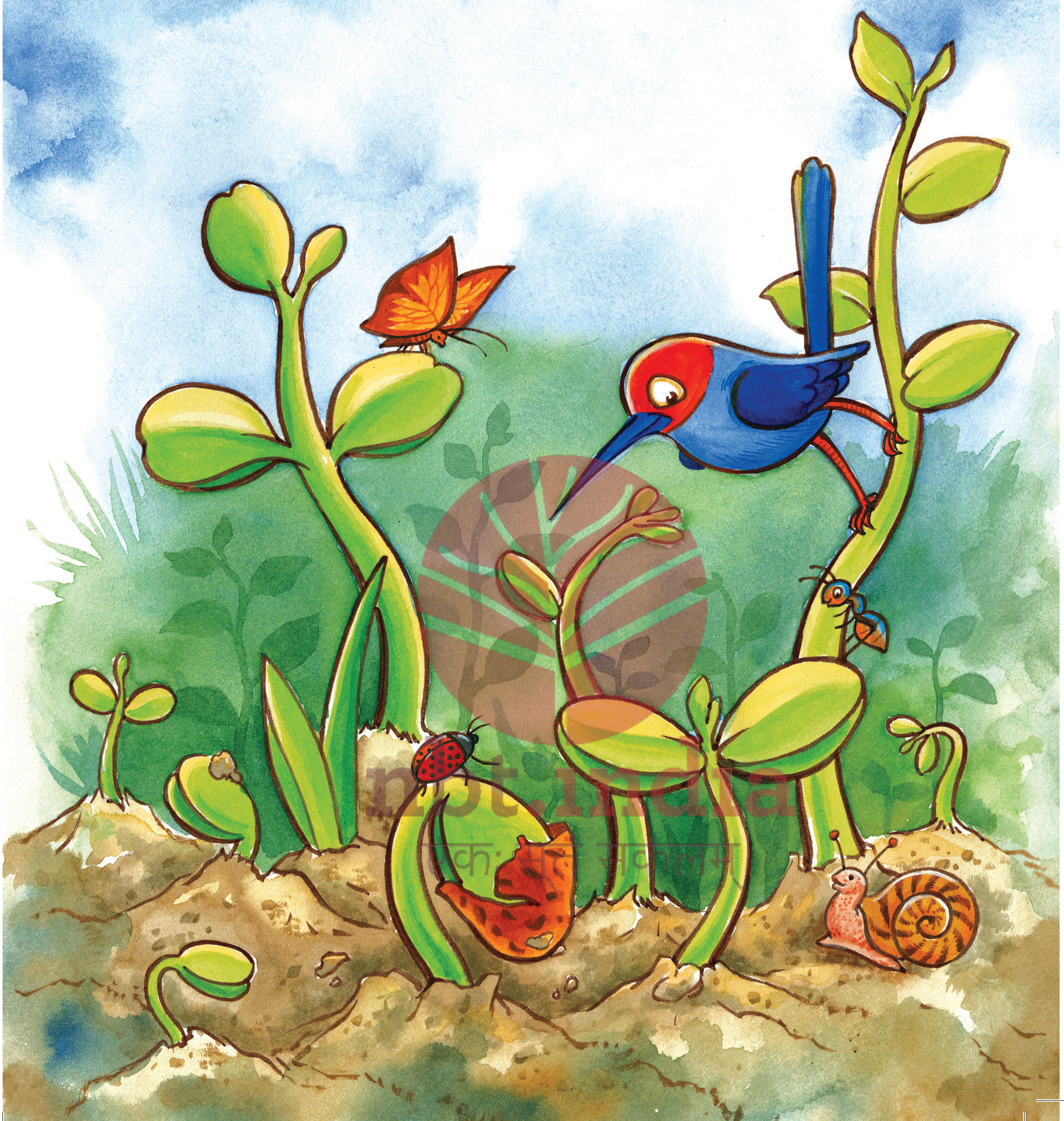
कठफोड़वे को एक तरकीब सूझी। उसने छिपकर फूल चोर का पीछा किया। मौका पाते ही गठरी में चोंच से छेद कर दिया।

बस फिर क्या था! गठरी के छेद से सूखे फूल बिखरने लगे। उसके साथ ही फूलों के बीज भी यहाँ-वहाँ गिर गए।

चोर गठरी लिए जहाँ जाता, फूल के बीज वहीं फैल जाते।



धीरे-धीरे गठरी हल्की होती चली गई। सूखे फूलों के बीज चारों ओर फैल गए। बारिश हुई और जमीन पर फैले फूलों के बीज में अँकुर फूटने लगे। कुछ ही समय में चारों ओर हरियाली हो गई।



फिर जंगल फूलों से भर गया।



फूल चोर को जब कठफोड़वे की इस करतूत का पता चला तो वह कठफोड़वे को मारने दौड़ा।

कठफोड़वा जहाँ जाता, फूल चोर उसका पीछा करता।





यह देख फुदकी फिर सबसे मदद माँगने गई। मधुमक्खियों ने सुना तो कठफोड़वे की जान बचाने दौड़ पड़ीं।

मधुमक्खियाँ मिलकर फूल चोर के पीछे पड़ गईं। फूल चोर तो मधुमक्खियों के डंक मारने की कल्पना कर के ही काँप गया। वह छिपकर जंगल के अँधेरे में ऐसा भागा कि आज तक नहीं लौटा।

जंगल में अब ढेर सारे फूल हैं - लाल, नारंगी, नीले.......और पीले वाले भी।



रॉयल ऑफसैट प्रिंटर्स, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित